आलमे ख़याल

आलमे ख़याल

शौक़ क़िदवाई

अदबी पब्लिशर्स

पब्लिशर्स :
अदबी पब्लिशर्स,
८ शेफर्ड रोड,
बम्बई नं. ८

पहली बार
अक्तूबर १९५६

प्रिंटर्स :
अदबी प्रिंटिंग प्रेस
८ शेफर्ड रोड,
बम्बई नं. ८

हिन्दुस्तानी शायरों ने औरत की नाजुक और अनमोल भावनाओं की बड़ी अच्छी अच्छी तस्वीरें खींची हैं। ये तस्वीरें दोहों की शक्ल में भी हैं और लम्बी लम्बी नज़्मों की शक्ल में भी। लम्बी कविताओं में उन्होंने बिरहा की मारी औरत की उन भावनाओं को दिखाया है जो हर महीने के अलग अलग मौसम के असर से उसमें पैदा होती हैं। इन नज्मों को बाराहमासा कहते हैं।

शौक़ क़िदवाई (लखनवी) की **आलमे ख़याल** को इसी बारहमासे का एक टुकड़ा कहा जा सकता है। इसमें चार नज़्में या चार रुख़ हैं। तीन नज़्मों में औरत की प्रेम भावना की तस्वीर खींची गई है और एक नज़्म में मर्द के ख्यालात को जाहिर किया गया है।

शौक़ की शायरी का ज़माना कोई पचास साल रहा है। उन्होंने भांति भांति की नज़्में कही हैं। **आलमे ख़याल** उनकी शायरी का सबसे अच्छा नमूना है। इसकी ज़बान बहुत हल्की फुल्की और बड़ी सादा है। बयान का तरीक़ा बहुत मनोरंजक है। भावनायें पवित्र हैं। नज़्म में नाटक का पहलू भी बहुत है, जिसकी वजह से उसकी ख़ूबी और बढ़ जाती है।

मिल्टन का कहना है कि नज़्म की ख़ूबी यह है कि वह सीधे सादे लफ्ज़ों में नाजुक ख़यालों के साथ अपने अन्दर असर रखती हो। शौक़ क़िदवाई की **आलमे ख़याल** मिल्टन की इस कसौटी पर पूरी उतरती है।

रश्क़शास

१

एक औरत का पति परदेस गया हुआ है। औरत उसकी याद में खोई खोई है और मन ही मन में बातें कर रही है।

आज ओ मेरे ख़याल, तू कहाँ कहाँ गया।
दिल भी तेरे साथ था, तू जहाँ जहाँ गया॥

तूने रुख़ जिधर किया, दिल का रुख़ उधर फिरा।
तू फिरा जो यास से, दिल भर आया सर फिरा॥

जबसे वह जुदा हुए, तबसे उनका ध्यान है।
उनसे मुझको उंस है, उनमें मेरी जान है॥

जाके फिर मेरी ख़बर, क्यों न ली सितम किया।
मेरी याद मेरी चाह, क्यों न की सितम किया॥

मुझसे क्यों ख़फ़ा हैं वह, फिर गई नजर तो क्यों।
दिल नहीं इधर तो क्यों, रुख़ नहीं इधर तो क्यों॥

मेरे रुख़ से दूर हैं, वह निगाह अब कहाँ।
उनका प्यार अब कहाँ, उनकी चाह अब कहाँ॥

मैं वही हूं या नहीं, वह वही हैं या नहीं।
उनके दिल की हालतें, वह रही हैं या नहीं॥

सावन और यह घटा, मैं कहीं हूं वह कहीं।
हुस्न यह उन्हीं का है, और वह देखते नहीं॥

साथवालियों के साथ, झूलने को जाऊं क्या।
दिल वहाँ है वह जहाँ, बेदिली से गाऊं क्या॥

पेंग आए जाएंगे, और हिलेगा दिल मेरा।
मिलके क्या मैं गाऊंगी, क्या मिलेगा दिल मेरा॥

खुल पड़ेगी ख़ुद बख़ुद, चाह हर सदा के साथ।
मुंह से बाहर आयेगी, आह हर सदा के साथ॥

करती हैं जिगर का खूं, हमसिनें जो साथ हैं।
वह लगा रही हैं आग, जिनके लाल हाथ हैं॥

और भी लगाई आग, सावनी ने फूल कर।
पेड़ पर मेरी नज़र, फिर पड़े न भूल कर॥

यह शबाब की उमंग, अब किसे दिखाऊं मैं।
रुख़ का लाल लाल रंग, अब किसे दिखाऊं मैं॥

लाल यह कहाँ रहा, ज़र्द होके रह गया।
रंग अब कहाँ है रंग, गर्द हो के रह गया॥

जिस्म वह नहीं रहा, उसमें कस नहीं है अब।
होंठ वह नहीं रहे, उनमें रस नहीं है अब॥

जोंक बनके रात दिन, चूसता है ग़म लहू।
ज़र्द होगया बदन, रह गया है कम लहू॥

काजल और मिसीका लुत्फ़, जब नहीं वही तो क्या।
आईने में ख़ुद ही मैं, देखती रही तो क्या॥

आरसी को फेंक दूं, मुंह लगा के क्या करूं।
बन संवर के क्या करूं, पान खाके क्या करूं॥

जेवर अब पहन चुकी, जीसे अब उतर चुका।
जाए भाड़ में सिंगार, दिल अब इससे फिर चुका॥

किससे नाज अब करूं, मेरे नाज उठाए कौन।
रूठने को रूठलूं, लेकिन अब मनाए कौन॥

किससे अपने दिलका भेद, अब मैं खुलके कह सकूं।
उसके साथ बेझपक, अब मैं मिल के रह सकूं॥

मांगती जो कोई चीज, उनसे मुसकुरा के मैं।
हंसते उसको देके वह, हंसती उसको पाके मैं॥

दिलमें अब लगी है आग, दिललगी वह लेगये।
अब हंसी का मुंह कहाँ, सब हंसी वह लेगये॥

यातो मुझसे छीनले, उनकी याद ऐ खुदा।
यातो उनको लाके कर, मुझको शाद ऐ खुदा॥

यातो कर सिड़न मुझे, होश में न आऊं मैं।
यातो अपने होश में, उनको देख पाऊं मैं॥

काम कुछ न कर सका, ओ ख़याल जाके तू।
मुझसे कुछ न कह सका, उनका हाल आके तू॥

तूने मेरे दिल का दर्द, उनसे कुछ कहा भी था।
उनसे मिलके तुझको याद, मेरा ग़म रहा भी था॥

क्या मैं तुझसे पूछ उठी, तू पयामबर नहीं।
तुझमें गो रसाई है, गुफ़तगू मगर नहीं॥

गुफ़तगू न हो तो ख़ैर, दिलपे तेरा बस तो है।
दिलकी दिलको दे ख़बर, हाँ यह दसतरस तो है॥

फिरके उनके दिलके गिर्द, घेरना ज़रूर था।
उनके दिलको मेरी सिम्त, फेरना ज़रूर था॥

उनके दिलमें करके राह, क्यों न उसमें की जगह।
तू तो था मेरा ख़याल, क्यूं न ली मेरी जगह॥

उनके दिलमें मेरी जा, शायद अब नहीं रही।
छिन गई मेरी जगह, और मैं यहीं रही॥

शायद और कोई शक्ल, खुबगई निगाह में।
कोई रोक होगई, इस तरफ़ की राह में॥

तौबह, होके बद गुमाँ, मैंने की ख़ता जरूर।
चाहे वह कहीं रहें, उनमें है वफ़ा जरूर॥

काश ओ ख़याल तू, अब न आए मेरे पास।
काश उनकी याद तू, अब न लाए मेरे पास॥

या मेरी नजर को ले, और उनके पास जा।
मुझसे तू जिगर को ले, और उनके पास जा॥

देखले नजर उन्हें, देखलें जिगर को वह।
आए मुझपे कुछ तरस, आयें अपने घरको वह॥

घरका नाम ख़ाक लूं, बनके यह बिगड़ चुका।
इसपे ओस पड़ चुकी, मिट चुका, उजड़ चुका॥

छत टपकती है तो उंह, कौन उसकी ले ख़बर।
रोरही हूं मैं इधर, रोरही है वह उधर॥

रंग ख़ाक में मिला, घर की फ़िक्र ख़ाक हो।
रंग उसी क़दर घटा, ख़ाक जिस क़दर बढ़ी॥

मैं ही ख़ाक में मिली, घर की फ़िक्र ख़ाक हो।
उनका जिक्र छोड़कर, घर का जिक्र ख़ाक हो॥

वह पलंग उन्हींका है, उसपे अब रहे तो कौन।
ख़ुदही आके वह रहें, जाके यह कहे तो कौन॥

अट गया है ख़ाक में, गर्द होगया पलंग।
आयें वह तो मुझसे लें, और एक नया पलंग॥

जिक्र क्या पलंग का, यह ज़रा सी चीज है।
मुझको अपनी जान तक, उनसे कब अजीज है॥

राह उनकी रोक लूं, अब जो उनको पाऊँ मैं।
पुतलियों में दूं जगह, सामने बिठाऊँ मैं॥

बाल अपने खोल कर, उनपे जाल डाल दूं।
जब ज़रा क़दम हिलें, उनपे बाल डाल दूं॥

ऐसा यह बोलता है कौन, दर्द जिसके दिल में है।
गर्म आती है हवा, आग उसके दिलमें है॥

कोई आके पेड़ पर, कह रहा है "पी कहाँ"।
पी कहीं हैं मैं कहीं, क्या कहूं है जी कहाँ॥

जी रही हूं मैं मगर, जी मेरा है पी के साथ।
पास हों कि दूर हों, हैं वह मेरे जी के साथ॥

आई उनकी सिम्त से, और बू भी लाई तू।
आज ओ हवा जरूर, उनको छूके आई तू॥

उनसे मिलके आई है, आ तेरी बलायें लूं।
तूने खुश किया मुझे, ले, तुझे दोआयें दूं॥

जाके उनके पास फिर, तू जो उनको ला सके।
दर्द दिल का जासके, चैन दिलको आसके॥

ओ दिल और क्या करूं, तेरे दर्द का इलाज।
ख़त में रखके भेज दूं, तुझको उनके पास आज॥

शर्त है कि मेरे पास, फिर पलट के आये तू।
अपने ख़ून की क़सम, देके उनको लाये तू॥

यूं न आयें तो मैं लूं, शौक़ की कशिश से काम।
खिंचके आयें इस तरह, तो न लें उधर का नाम॥

२

औरत अपने पति के आने की आस लगाये है कि उसके पति की चिट्ठी परदेस से आती है। वह लिखता है कि किसी मजबूरी से वह अभी नहीं लौट सकता। औरत बेकल हो कर पति को चिट्ठी लिखती है।

पाके तुम्हारे ख़तको आज, दिलकी तड़प बढ़ी कुछ और।
दिलमें भड़कके ग़मकी आग, जिस्म पे तप चढ़ी कुछ और॥

आने का आसरा कहाँ, यास से वह बदल चला।
दिल मेरा आँसुओं के साथ, बनके लहू निकल चला॥

दर की तरफ़ थी जो निगाह, यास से अब ज़मीं पे है।
हाथ कभी जिगर पे है, और कभी ज़बाँ पे है॥

ज़ोफ़ से जिस्म लट चला, रूह बदन से हट चली।
चेहरे का रंग कट चला, नब्ज़ की चाल घट चली॥

ख़त से पड़ी जिगर पे चोट, दाग़ हरे हुए हैं आज।
तुमसे हज़ारहा गिले, दिल में भरे हुए हैं आज॥

ख़त है तुम्हारे हाथ का, पढ़ती हूं इसको बार बार।
खोलती हूं हज़ार बार, चूमती हूं हज़ार बार॥

जिनसे लिखा गया है ख़त, काश वह उंगलियाँ मिलें।
मेरा ख़याल चूमले, जाके वहीं जहाँ मिलें॥

खुद भी गये तुम और चैन, छीन के मुझसे ले गये।
मुझको सिड़न बना गये, मुझको जुनून दे गये॥

सबके जिगर में ख़ून है, मेरे जिगर में दर्द है।
सबका शबाब लाल है, मेरा शबाब ज़र्द है॥

एक तुम्हीं थे मेरा ऐश, बन गये ग़म तो क्या करूं।
पहले तुम्हीं थे मेरा चैन, अब हो सितम तो क्या करूं॥

ऐश को खो गये हो तुम, आओ तुम्हीं तो फिर मिले।
चैन को लेगये हो तुम, लाओ तुम्हीं तो फिर मिले॥

तुम न सितम करो तो क्यों, दिल मेरा बेक़रार हो।
मैं नहीं चाहती कि तुम, मेरे गुनाहगार हो॥

क्या मैं ख़ुदा के सामने, तुमको सज़ा दिलाऊँगी।
अपनी वफ़ा के नाम को, ख़ाक में मिलाऊँगी॥

छुप गये पुत्लियों से तुम, उनको नज़र न आओगे।
यह तो कहो कि किस तरह, दिलसे निकलके जाओगे॥

दिल में जमे हो तुम मगर, चूस रहे हो ख़ून को।
सर में ख़याल बनके तुम, देते हो शह जुनून को॥

बनके लहू तुम्हारी याद, दौड़ रही है जिस्म में।
जान यही है जिस्म में, रूह यही है जिस्म में॥

दम मेरा लू से बढ़के गर्म, दिल मेरा बेहवास है।
जिस्म में जल गया लहू, और अभी तपको प्यास है॥

माँगती हूं तुमसे भीक, दो तो कोई ज़रर नहीं।
चाहती हूं तुमसे रहम, माल नहीं यह ज़र नहीं॥

रहमसे मेरे दिलको चैन, दोगे तो देसकोगे तुम।
अपने खुदासे यह सवाल, लोगे तो लेसकोगे तुम॥

अपना खयाल तक नहीं, चाह के जोश में मुझे।
एक तुम्हारी याद हाँ, लाती है होश में मुझे॥

आईने में है एक चीज, चैन मुझे उसी से है।
उंस है तो उसीसे है, और नहीं किसी से है॥

देखती रहती हूं उसे, प्यार के साथ बार बार।
उसकी बलायें लेनेको, बढ़ते हैं हाथ बार बार॥

है यह तुम्हारीही शबीह, और यह मेरी जान है।
इसमें तुम्हारा हुस्न है, इसमें तुम्हारी शान है॥

जान तू मेरी है मगर, कुछ नहीं बोलती तो क्यों।
देखती है मुझे जरूर, मुंह नहीं खोलती तो क्यों॥

शक्ल है यह तुम्हारी ही, तुम हो खफा तो यह भी है।
दूर तुम और चुप शबीह, वह है खफा तो यह भी है॥

तुम नज़र आही जाते हो, अय वह ख़याल ही सही ।
कुछ नहीं तो शबीह से, सिर्फ़ जमाल ही सही ॥

तुमसे मेरे नसीब में, शायद अभी करम नहीं ।
वह हैं बड़ी ही ख़ुश नसीब, हिज्र का जिनको ग़म नहीं ॥

रहती हैं शौहरों के साथ, ख़ूब सिंगार करके वह ।
हंसती हैं खिलखिलाके वह, तनती हैं बन संवरके वह ॥

रुख़ पे शबाब की बहार, रंग से दोनों गाल लाल ।
माँग पे मोतियों का हुस्न, पान से होंठ लाल लाल ॥

वह जो लचकके हिल पड़ीं, शाख़ गुलों की हिल पड़ी ।
होंठ जो हंसके खुल पड़े, गुल की कली सी खिल पड़ी ॥

बाल खुले तो खाके बल, दिलको लपेट ले गये ।
दिलमें थे जितने वलवले, सबको समेट लेगये ॥

कुछ तो ख़ुद बदन में कस, तनती हैं कुछ अदा के साथ ।
कुछ तो है हुस्न क़ुदरती, बनती हैं कुछ अदा के साथ ॥

लेनेको शौहरोंके दिल, लुत्फ़ है बात बात में ।
हुस्न है अपनी घात में, नाज़ हैं अपनी घात में ॥

मुझको है ग़म तो फिर सिंगार, कौन करे तुम्हीं कहो ।
देखके हुस्न मुझको प्यार, कौन करे तुम्हीं कहो ॥

रखते नहीं यह होंठ रंग, रखते नहीं यह गाल रंग ।
तुम नहीं तो नज़र में है, ख़ून का रंग, लाल रंग ॥

काजल उड़े करूं न अब, उसकी तरफ़ निगाह मैं ।
बहता है आँसुओं के साथ, होती हूं रूसियाह मैं ॥

ख़ाक में चूड़ियाँ मिलें, जी को जला रही हैं यह ।
भाड़ में जायें बिजलियाँ, आग लगा रही हैं यह ॥

बार हैं पत्ते बालियाँ, ख़ार हैं चूहे–दंतियाँ ।
किसको दिखाऊँ अपने कान, अब मैं पहनके अंतियाँ ॥

देती है दाग़ आरसी, मैं न छुऊँगी अब इसे ।
आती है ज़र्दरू नज़र, देखती हूँ मैं जब इसे ॥

बस इसको मैं पहन चुकी, दिल पे गिराँ है जेवर अब।
तुम नहीं देखते सिंगार, ख़ाक फबे यह मुझ पे अब ॥

बक्समें इसको करके बन्द, सब मैं तुम्हींको भेज दूं।
था यह तुम्हारे ही लिये, अब मैं तुम्हींको भेज दूं ॥

मुझको तो चाहते नहीं, शौक़से आके देखना।
चाहतेहो जिसे वहाँ, उसको पहनाके देखना ॥

तंज से क्या यह कह उठी, शोख़ मेरी ज़ुबाँ हुई।
है यह ज़ुबाँ गुनाहगार, मैं नहीं बदगुमाँ हुई ॥

तुममें वफ़ा हो या न हो, मैं यह कहूंगी है जरूर।
हाँ यह कहूंगी राह को, रोके है कोई शै जरूर ॥

आओ न आओ मैं शबाब, तुम पे निसार कर चुकी।
तुम मुझे प्यार कर चुके, मैं तुम्हें प्यार कर चुकी ॥

किससे कहूँ मैं दिलका भेद, सोच में पड़ी हुई।
लेट गयी तो आया सोच, बैठ गयी खड़ी हुई ॥

होती हूं तंग करवटें, ग़म से बदल बदलके मैं।
काटती हूं सिड़न की तरः, रात टहल टहलके मैं॥

फोड़के मुंह, जो कोई चीज़, माँग उठी तो जक मिली।
आये पसंद ऐसी चीज़, मुझको न आज तक मिली॥

तेल को मैं तरस गई, बाल मेरे चिकट गये।
मैं ही लुटी तो बाल क्या, उंह वह बलासे लुट गये॥

जैसी फंसी बला में अब, और कभी फंसी नहीं।
दिल में कभी ख़ुशी नहीं, मुंह पे कभी हंसी नहीं॥

मेरी ख़ुशी की ज़िंदगी, अक़्द से पेशतर रही।
साथ तुम्हारा क्या हुआ, छूट के तुमसे मर रही॥

जज़्ब के वलवले हज़ार, यह मुझे सब अज़ाब हैं।
सब मेरे दिल का जोश हैं, सब मेरा इज़्तेराब हैं॥

क्यों मैं अज़ाब कह उठी, चूक है यह क़ुसूर है।
हिज्र में जज़्ब ही से है, दर्द को जो सुरूर है॥

जज़्ब में काश हो यह ज़ोर, जो तुम्हें लाये खींचकर।
घर मेरी पुतलियों के हैं, इनमें बिठाये खींच कर॥

चाह के रुख़ खिंची हूं मैं, काहरुबा से जैसे घास।
दिल है तपिश से बेक़रार, तेज़ हवा से जैसे घास॥

काहरुबा से घास को, खींचती हूं हज़ार बार।
जज़्ब को मैं दिखाती हूं, ज़ोर कशिश का बार बार॥

अब भी न यह करे कशिश, तो उससे कोई क्या करे।
जज़्ब का नाम जज़्ब ही, फिर न रहे ख़ुदा करे॥

दिल मेरा ले गये हो तुम, इसको न छोड़ दूंगी मैं।
तोड़ चुके हो तुम तो ख़ैर, लाओ तो जोड़ लूंगी मैं॥

काँप के दिल में लाओ ख़ौफ़, अपने ख़ुदाका तुम कभी।
अपनी वफ़ा से दो जवाब, मेरी वफ़ा का तुम कभी॥

सिर्फ़ तुम्हारे दीद की, तुमसे हूं तालिब और बस।
सिर्फ़ तुम्हारी आरज़ू, मुझ पे है ग़ालिब और बस॥

फिर के तुम्हारी शक्ल से, दिल न हटा न हट सके।
और किसी तरफ़ कभी, ध्यान बटा न बट सके।

झूठ जो मैं ज़रा लिखूं, तो हो ख़फ़ा मेरा ख़ुदा।
चाह को मुझसे छीन ले, दे यह मुझे सज़ा ख़ुदा॥

तौबह यह क्या मैं बक गई, तौबह यह क्या मैं कह गई।
चाह तुम्हारी जब छुटी, फिर तो मैं कुछ न रह गई॥

चाह का नाम सहर है, तुम पे असर करे यह काश।
जज़्ब से खींच कर तुम्हें, रुख़ को इधर करे यह काश॥

ग़म से दबी ख़ुशी मगर, चाह की यह ख़ता नहीं।
हिज्र है जिसकी चोट से, दर्द की इंतेहा नहीं॥

ज़ब्त की कोई हद भी है, चाह को मैं छुपा चुकी।
ग़म की तो कोई हद नहीं, कम न हुआ मैं खा थकी॥

अश्क तो बहते हैं मगर, अश्क नहीं निगाह में।
बढ़के यह मोतियों से हैं, मुझको तुम्हारी चाह में॥

आंचल अगर हो तर तो मैं, ख़ुश्क करूं निचोड़ कर।
सास के पास जाऊं तो, मुंह को उधर से मोड़ कर॥

रहती हूं सबसे मैं अलग, ताकि न ताड़ जायें लोग।
रोती हूं सबसे छुपके मैं, ताकि न देख पायें लोग॥

आती हैं हमसिनें मगर, मुझमें नहीं हंसी मेरी।
शर्म से क्या कहूं कि "वह", लेगये दिललगी मेरी॥

मैं न कहूं ज़ुबाँ से कुछ, खुलता है दर्द रंग से।
देखती हैं वह ग़म की शक्ल, चेहरे के जर्द रंग से॥

पूछती हैं तो क्या कहूं, छेड़ती हैं तो क्या करूं।
साध के चुप लहू के घूंट, बैठी हुई पिया करूं॥

झूलने को जो वह कहें, जाऊं मैं उठ के जब्र से।
गाएं तो गाऊं उनके साथ, ग़म को छुपा के सब्र से॥

सावन अगर मैं गाऊं भी, तो वही जिसमें दर्द हो।
राग में खींचे औरत आह, दूर जिसका मर्द हो॥

गाने का दम ही किसमें है, तान निकलती ही नहीं ।
साँस में जोर ही नहीं, खुलके यह चलती ही नहीं ॥

पहले लचकके नाज़से, खाती थी मैं हज़ार बल ।
तुम नहीं अब तो ज़ोफ़ से खाती हूं बार बार बल ॥

ज़ोफ़ का हाल क्या कहूं, ज़ोर को रंज खा गया ।
आह के साथ बारहा, दिल मेरा मुंह तक आगया ॥

पाल गये हो तुम चकोर, होती हूं उससे शाद मैं ।
लेके उसी को गोद में, करती हूं तुमको याद मैं ॥

चाँदनी रात में मगर, देते हो ग़म ज़रूर तुम ।
उसकी नज़र में चाँद है, मेरी नज़र से दूर तुम ॥

चाँदनी रात सर्द है, करती है दिल को सर्द वह ।
तुम मेरे चाँद मुझसे दूर, मेरे लिये है दर्द वह ॥

शबको पतिंगे आते हैं, गिरते हैं वह चिराग़ पर ।
और जलाते हैं मुझे, देते हैं दाग़ दाग़ पर ॥

पाऊं तुम्हें तो हूं निसार, गिर्द फिरूं इसी तरह ।
तुमसे मिलूं इसी तरह, तुम पे गिरूं इसी तरह ॥

तुम मुझे क्यों न ले गये, चल दिये मुंह को मोड़ कर ।
चल दिये मुझको छोड़कर, चल दिये दिलको तोड़कर ॥

सास को मुझपे रहम क्या, वर्ना यह रोकतीं तुम्हें ।
नन्द को मुझ पर क्या तरस, वर्ना यह टोकतीं तुम्हें ॥

पाक मुहब्बत और मैं, मिलने की फ़िक्र क्यों न हो ।
जोश वफ़ा का और दिल, चाह का जिक्र क्यों न हो ॥

जिनके दिलों में खोट हो, उनको कहाँ वफ़ा से काम ।
मुझमें वफ़ा है इसलिये, ग़म में पड़ा ख़ुदा से काम ॥

हिज्र की काहिशों के साथ, यह मेरी नाज़ुकी, यह सिन ।
मुझको सज़ा यह क्यों मिली, सोच यही है रात दिन ॥

की नहीं मैंने कुछ ख़ता, की हो तो भूल जाओ तुम ।
मुझको न देखना मगर, ख़ैर से घर को आओ तुम ॥

आओ जो तुम तो रुख़ पे मैं, आँचल उठा के डाल लूं।
इसमें तो हर्ज कुछ नहीं, झाँक के देख भाल लूं ॥

अब्र उमंड के आगया, रोऊंगी इसके साथ मैं।
अपने जिगर के ख़ून से, धोऊंगी रोके हाथ मैं ॥

बोल उठा वह मेरा मोर, हाथ से अब तो दिल गया।
मुझको न मिल सकोगे तुम, उसको तो अब्र मिल गया ॥

घरमें है पेड़ अनार का, उसपे पपीहे आते हैं।
देख के मेरी बेकसी, मुझपे तरस वह खाते हैं ॥

वह नहीं बैठते कभी, पेड़ के ऊपर आके चुप।
तुमको पुकारते हैं रोज़, शर्म से मुझको पाके चुप ॥

अब्र उठे तो सुनके शोर, रोती हूं ख़ौफ़ खाके मैं।
देखके बिजलियोंकी आग, गिरती हूं तिलमिलाके मैं ॥

तुम मेरे पास हो तो फिर, ख़ौफ़ मुझे ज़रा न हो।
वह्म से डर है डर से वह्म, जब कोई दूसरा न हो ॥

औरत अगर मैं हो पड़ी, इसमें मेरी ख़ता नहीं।
यह तो कहो कि तुम पे कुछ, मेरा भी हक़ है या नहीं॥

पाँव ख़ुदाने क्यों दिये, क्या इसी सह्न के लिये।
सब मेरे दिल के हौसले, मुझसे हयाने ले लिये॥

परदे में रह के औरतें, मरती हैं गो क़ज़ा न हो।
शर्म का हक़ अदा करें, चाह का हक़ अदा न हो॥

अश्क मेरे टपक पड़े, ख़त हुआ तर मैं क्या करूं।
भीगके कुछ बिगड़ गये, हर्फ़ मगर मैं क्या करूं॥

बंध गया आँसुओं का तार, ख़ुश हूं मैं देख कर इसे।
बन गया मोतियों का हार, पहने तुम्हारी याद इसे॥

सब्र से गुज़री, मौत पर, अब तो जिगर करूंगी मैं।
अपने बदन की आगसे, आप ही जल मरूंगी मैं॥

मुझको यक़ीन है कि तुम, आके मुझे न पाओगे।
आके न पाओगे तो क्या, मेरी लहद पर आओगे॥

फ़ातेहा भी पढ़ोगे तुम, हाथ उठाके या नहीं।
रूहको ख़ुश करोगे तुम, फूल चढ़ाके या नहीं॥

सबज़े को देखना ज़रूर, मुझ पे वह बार हो न जाये।
नर्म रहे हरा रहे, सूखके ख़ार हो न जाये॥

जान लबोंसे दे चुकी, तुमको पयाम और बस।
सुनती हूं शौक़ हैं वहीं, उनको सलाम और बस॥

३

पति ने औरत के ख़त का
जवाब लिखा है।

तुम्हारे ख़त को देख कर, नजर इसी में घिर गई।
तुम्हारी शक्ल ख़त के साथ, पुत्लियों में फिर गई॥

है लफ़्ज लफ़्ज ख़त का दर्द, व ग़म की दासतान से।
क़लम तुम्हारा दिल बना, वह बोल उठा ज़ुबान से॥

तुम्हारे सब गिले बजा, तड़प बजा, अलम बजा।
तुम्हारी सब शिकायतें, तुम्हारी ही क़सम बजा॥

वहाँ जो दिल में दर्द है, यहाँ भी आह सर्द है।
वहाँ जो रंग जर्द है, यहाँ भी रुख़ पे गर्द है॥

उधर भी चोट इधर भी है, न ताब उधर न ताब इधर।
न चैन उधर न चैन इधर, न ख़्वाब उधर न ख़्वाब इधर॥

उधर टहल के शब कटे, इधर तड़प के शब कटे।
यह सोच शाम ही से है, कि देखें रात कब कटे॥

तुम्हारा चैन मैं ही था, जो दूर मैं तो दूर वह।
सुरूर मेरे दमसे था, न मैं न अब सुरूर वह॥

मेरी ख़ुशी तुम्हीं से थी, न तुम न अब ख़ुशी मेरी।
फ़राक़ छीन लेगया, रुलाके सब ख़ुशी मेरी॥

वह दिन ख़याल होगये, वह रातें ख़्वाब होगयीं।
वह दो दिलों की राहतें, सब इज़्तेराब होगयीं॥

न इन लबों पे वह हंसी, न रुख़ पे अब वह रंग है।
न रूह में वह ताज़गी, न दिलमें वह उमंग है॥

शबाब, रंग, हुस्न, उनकी सूरतें बिगड़ गईं।
घरों में लूट पड़ गई, तो बस्तियाँ उजड़ गईं॥

जहान कोई दूसरा, जो ग़मसे पाक हो कहीं ।
तो हम तुम इस जहानसे, निकल चलें, रहें वहीं ॥

यहाँ हज़ार आफ़तें, उन्हींमें दिल घिरा करें ।
यहाँ हज़ार गर्दिशें, उन्हीं में सर फिरा करें ॥

वह मुल्क चलके ढूँढ लें, जहाँ न आसमान हो ।
जहाँ न उसके ज़ुल्म से, मुसीबतों में जान हो ॥

जहाँ न हो अजल कि, "उसको" उसका दाग़ दे सके ।
जहाँ ज़मीन ही न हो, कि गोर मुंह में ले सके ॥

जहाँ न कोई फ़िक्र हो, न भूक हो न प्यास हो ।
जहाँ न मैं उदास हूं, जहाँ न तुम उदास हो ॥

तुम्हारे आँसुओं के दाग़, ख़त में जिस जगह पड़े ।
वह ख़तसे मेरे दिल में आके, दाग़ बनके रह पड़े ॥

तुम्हारी उम्र हो दराज़, अजल का नाम छोड़ दो ।
लहद के मुंह में ख़ाक मुंह से, यह कलाम छोड़ दो ॥

हवा लहद के सब्ज़े की, भरे न फिर देमाग़ में।
है सब्ज़ा नर्म और हरा, तुम्हारे ख़ाना बाग़ में॥

न तुम हो भूलने की शै, न तुम हो छूटने की शै।
क़सम ख़ुदा की, तुम हो दिलमें और दिल बग़लमें है॥

नज़रमें ख़ुब्के, नूर बनके, तुम मेरी नज़रमें हो।
जमाल बनके दिलमें हो, ख़याल बनके सरमें हो॥

तुम्हारी मुस्कुराहटों की, याद कर रहा हूं मैं।
खुलें न दाँत इस अदा पे, साद कर रहा हूं मैं॥

वह लब, वह उनकी जुम्बिशें, मेरी नज़र को याद हैं।
वह हल्की हल्की चुटकियाँ, मेरे जिगर को याद हैं॥

वह तिरछी तिरछी चितवनें, सितम करें फिरें जिधर।
वह काली काली पुत्लियाँ, कभी उधर कभी इधर॥

वह बाल खोल कर कभी, झटक के सरको थामना।
लचक पड़े बदन तो फिर, लपकके दर को थामना॥

लबों को अपने पोछना, वह आरसी को देख कर ।
न फैल जाय ताकि रंग, पान का इधर उधर ॥

वह नाजुकी कि तुमने कह के, यह उतारी आरसी ।
गिरी है मेरे हाथ पर, जड़ाउ भारी आरसी ॥

वह नापसंद लौंग का, भवें चढ़ा के फेरना ।
वह मेरी सिम्त फिर नजर को, मुस्कुराके फेरना ॥

गिलौरियों की सूरतें, वह ख़ुशनुमा नई नई ।
सुपेद पान ऊपर और, अंदर उसके पिस्तई ॥

वह सादगी तुम्हारी, बांकपन को शह दिये हुये ।
वह शोख़ियाँ हया को अपनी, गोदमें लिये हुये ॥

सहर के वक़्त फेंकना, गले से हार उतार के ।
बिछौने से वह झाड़ना, गिरें जो फूल हार के ॥

वह हार मुझको याद है, कहा था देखकर जिसे ।
हैं मोगरे के फूल कम, नहीं पहनती मैं इसे ॥

करख़्त बू है, सरमें दर्द होगा, दूर डालदो।
नहीं तो कामनी के फूल, चुन के तुम निकालदो॥

पलंग अपना खींचकर, वह चाँदनी में लेटना।
हवा सहर की सर्द हो, तो जिस्म को समेटना॥

ज़री करेब से वह चिढ़, कि चुभती है यह ख़ारसी।
पसंद सिर्फ़ मलमल और, गुलबदन बनारसी॥

वह चूड़ियों का फेरना, कहा था देख कर जिन्हें।
चुभेंगे इनके गोखरू, न पहनूंगी कभी इन्हें॥

कहो बदल के लायें ऐसी, चूड़ियाँ बड़े मियाँ।
कि तीन तीन बाकें, चार चार हों करेलियाँ॥

गिरा ज़मुर्रुद एक शब, जो टूट कर बुलाक़ से।
तुम उसको ढूंढने लगीं, चिराग़ लेके ताक़ से॥

तुम्हें तो वह नहीं मिला, मगर मैं उसको पा गया।
दिया तो फिर तुम्हें मगर, मैं उस घड़ी छुपा गया॥

मेरी हंसी पे वह तुम्हारा, पेचो ताब याद है।
वह तेवरियां चढ़ी हुई, वह इज़्तेराब याद है॥

ग़रज़ ख़ुदा से है दुआ, कि तुम हो और जहान हो।
तुम्हीं तो मेरी रूह हो, तुम्हीं तो मेरी जान हो॥

तुम्हारा ज़ेवर और आये, मेरे पास डाक पर।
लगाया तीर तंज़ का, यह तुमने दिलको ताक कर॥

तुम्हारी बदज़नी बजा, मगर ग़लत, मगर ग़लत।
यह आँखें बेवफ़ा नहीं, तो पड़ती क्यों नज़र ग़लत॥

नज़र में तुम जिगर में तुम, तो कौन दख़्ल पा सके।
मकान सब घिरे हुए हैं, कौन इनमें आ सके॥

क़सम तुम्हारे गेसुओं की, जिनके पेच में है दिल।
क़सम तुम्हारे साफ़ रुख़ की, जिस पे है सियाह तिल॥

क़सम तुम्हारी पुत्लियों की, जिनकी हर नज़र बला
क़सम तुम्हारे अबरुओं की, जिनके बस में करबला।

क़सम तुम्हारे उन लबों की, जिनका रंग लाल है।
क़सम तुम्हारे घुंगरुओं की, जिनके पास जाल है॥

क़सम तुम्हारे सर की, जिसमें बाल हैं बड़े बड़े।
क़सम नज़र की, सेहर जिससे, पाये ज़क अगर लड़े॥

क़सम तुम्हारे दिलकी, जिसमें बारहा फिरा हूं मैं।
क़सम तुम्हारे वसवसों की, जिनमें अब घिरा हूं मैं॥

क़सम तुम्हारे उस सुख़नकी, तंज़ जिसका काम है।
क़सम तुम्हारी उस छुरीकी, नाज़ जिसका नाम है॥

क़सम तुम्हारी उस हंसी की, जिससे गुल खिला करे।
क़सम तुम्हारी उस ज़ुबाँकी, मुझसे जो गिला करे॥

क़सम तुम्हारे उस ग़ज़बकी, सुर्ख़ जिससे गाल हों।
क़सम तुम्हारी उस हिना की, हाथ जिससे लाल हों॥

क़सम शिकन की, जब जबीं पे, नाज़ उसको डाल दे।
क़सम सदाकी, बातको, जब उंह के साथ टाल दे॥

क़सम गलेकी जिससे जेब, मोतियोंके हार को।
क़सम दहनकी जिसके दाँत, दें शिकस्त अनारको ॥

क़सम है उंगलियोंकी, दिलको छीन लें वह जब हिलें।
क़सम है रुख़ के साये की, जहाँ पे जिससे गुल खिलें॥

क़सम है बेरुख़ी की जिसको, फिरके रुख़ अयाँ करे।
क़सम है ख़ामशी की जब, निगाह कुछ बयाँ करे ॥

क़सम है तन की क़दे आदम, आईना जिसे कहूं।
क़सम क़द की जिसका साया, बनके काश मैं रहूं॥

क़सम तुम्हारी चाल की, है जिसके साथ हश्र है।
क़मस है क़द की जुम्बिशों की, जिनके साथ नश्र है॥

ग़रज़ तुम्हारे हुस्न की, क़सम यक़ीन मान लो।
मेरे जिगरमें और दिलमें, हो तुम्हीं यह जान लो॥

यहाँ मैं आके पड़गया, तिजारतों के फेर में।
जब उनमें गुत्थियाँ पड़ीं, तो सुलझीं जाके देर में॥

न छोड़ो अपना आसरा, न तोड़ो दिलको याससे ।
न तुम उम्मीद को हटाओ, अपने दिलके पाससे ॥

गिले न फिर गिले रहेंगे, मुझको पाके एक दिन ।
हंसी बनेंगे सब गिले, लबों पे आके एक दिन ॥

मैं ख़तमें चैन भेज दूं, जो तुमको चैन आसके ।
नज़र तो पाही जाएगी, मगर जो दिल भी पासके ॥

यह ख़त है मेरे हाथ का, इसीको चैन जान लो ।
मैं बीसवें दिन आउंगा, यक़ीन इसका मान लो ॥

मैं इस ख़बरसे ख़ुश हुआ, कि ज़िंदा है चकोर अभी ।
तुम्हारे पास है तुम्हारा, वह हसीन मोर अभी ॥

पपीहे ख़ुश रहें कि रोज़, वह मुझे बुलाते हैं ।
जो अब कहें वह 'पीकहाँ', तो तुम कहो कि आते हैं ॥

यह ख़त तो ख़त्म हो चुका, पयाम अब है शौक़का ।
दुआएं अब हैं शौक़ की, सलाम अब है शौक़का ॥

४

पति ने चिट्ठी में लिखा था कि मैं बीसवें दिन घर पहुंचूंगा। आज बीसवाँ दिन है। औरत उसके इंतज़ार में मन ही मन बातें कर रही है।

ख़तको है बीसवाँ दिन, आज आयेंगे वह ज़रूर ही।
क्या मैं खिंची हुई रहूं, "उन" की नज़र से दूर ही॥

"उन" की सदा सुने तो फिर, हो न सके जिगरसे सब्र।
पाके "उन्हें" कभी न हो, तरसी हुई नज़रसे सब्र॥

क्या मैं जिगर को थाम लूं, क्या मैं नज़रको फेर लूं।
क्या "वह" उधरसे आयें तो, रुख़ मैं इधर को फेर लूं॥

"उन" की कशिशमें आके रुख़, फिर न सके तो क्या करूं।
दिलसे करूं तो ज़ोर मैं, दिल जो थके तो क्या करूं॥

और अगर न आये "वह", हाए यह शक सितमका है।
आ मेरे दिलमें ओ उम्मीद! वक़्त तेरे करमका है॥

शकसे पड़ी मैं सोचमें, डरती हूं यास आ न जाय।
उससे चिढ़ी हुई हूं मैं, वह मेरे पास आ न जाय॥

आते ही यास का ख़याल, काँप उठी हूं डरके मैं।
दर नहीं दिलमें वर्ना आज, बैठती बंद करके मैं॥

याससे हूं जली हुई, उसको मैं झोंकू भाड़ में।
हट मेरे दिलसे ओ शक आज, यास है तेरी आड़ में॥

आयेंगे या न आयेंगे, दिल मेरा काश बोल दे।
नाख़ुन अगर बने तो यह, शककी गिरहको खोल दे॥

बोल उठा वह मेरा दिल, कहता है आरहे हैं "वह"।
मेरे लिये बहुत सा चैन, तोहफ़ेमें ला रहे हैं "वह"॥

देख रही हूं आरसी, चेहरे पे रंग आगया।
दिलने किया है सुर्ख़रू, वर्ना कहाँ से पागया॥

दिलको मिला कहाँ से रंग, उसको मिला उम्मीद से।
पायेगा यह कुछ और भी, आज ही उनकी दीदसे॥

कल मेरे सरमें था जुनून, आज है कुछ गुरूर सा।
कल मेरे दिलमें था मलाल, आज है कुछ सुरूर सा॥

अपने लबों पे बार बार, पाती हूं मैं तबस्सुम आज।
ख़ुश रहो ऐ मेरे लबो, कहते हो और कुछ तुम आज॥

घर की जमीन जाग उठी, सहन पे नूर छा गया।
आयेंगे "वह" जरूर ही, मुझको यक़ीन आ गया॥

नाच रहा है ख़ूब आज, सुनके हुआ है मोर ख़ुश।
उसको भी मिल गई ख़बर, फिरता है क्या चकोर ख़ुश॥

आके पपीहे पेड़ पर, अब जो कहेंगे "पी कहाँ"।
उनसे कहूंगी हंसके मैं, बैठे हैं देखो पी यहाँ॥

दिल तो ख़फ़ा नहीं, मगर, मेरी नजर झुकी रहे।
बाद को बात चीत हो, पहले जुबाँ रुकी रहे॥

पाके "उन्हें" रुके ज़ुबाँ, इसमें कहाँ यह ज़ब्त है।
इसको तो बोल चालमें, उनकी ज़ुबाँसे रब्त है॥

बनने को मैं बनूं, मगर, बन भी सकूंगी या नहीं।
तनने को मैं तनूं मगर, तन भी सकूंगी या नहीं॥

बनके शगुफ़्तगी ख़ुशी, रुख़से जो खिल पड़े तो फिर।
लुत्फ़के साथ करके मेल, उनसे नज़र लड़े तो फिर॥

होंठ तो मेरे बसके हैं, उनको सिखाऊं जंग में।
लेकिन उड़ाऊं किस तरह, रुख़से ख़ुशीका रंग मैं॥

तरसी हुई हैं पुत्लियाँ, चैनसे कब यह रह सकें।
शौक़से बेक़रार हूं, गरचे यह कुछ न कह सकें॥

दिल यह कहेगा मेल कर, लब यह कहेंगे बोल दे।
हुस्न कहेगा हाथसे, तू मेरे रुख़को खोल दे॥

आप ही बढ़ चलेंगे पाँव, आऊंगी हटके सामने।
लायेंगी शोख़ियाँ मुझे, घूंघट उलट के सामने॥

मुश्किल कशिश की बन पड़ी, दिलको जो रोक थाम लूं।
सब्र की दिलमें ठान लूं, जब्रसे दिल पे काम लूं ॥

बनके बला मैं उनके सर, आज पड़ूं जरूर ही।
दिलमें हंसा करूं मगर, मुंहसे लड़ूं जरूर ही ॥

ख़तमें गिले मैं लिख चुकी, और गिलों में लुत्फ़ है।
होगी मज्रे की नोक झोंक, गरचे दिलोंमें लुत्फ़ है ॥

आँख मेरी जो उठ ही जाय, जल्द नज्ररको फेर लूं।
सिर्फ़ नज्रर ही को नहीं, बल्कि मैं सरको फेर लूं ॥

आयें जो रुख़ की सिम्त "वह", हाथोंसे मुंह छुपाऊं मैं।
झाँक के उंगलियों से हाँ, देखूं जो देख पाऊं मैं ॥

दाँत मेरे दबायेंगे, ताकि रहे ज़ुबान बंद।
कुछ "वह" कहें तो उंगलियाँ, उठके करेंगी कान बंद ॥

एक पलक से दूसरी, बंद रहे, मिली रहे।
जैसे अनार की कली, सूख के बेखिली रहे ॥

नीचे के लब पे दाँत हों, और नज़र ज़मीं पे हो।
हाथ मेरे जिगर पे हों, और शिकन जबीं पे हो॥

मेरे लबों पे गर हंसी, आयेगी छेड़ छाड़ में।
हाथ में लेके पंखिया, मुंह को करूंगी आड़ में॥

लब न हिलें ख़ुदा करे, मैं जो उन्हें हिलाऊं भी।
"उन" से मिलें न चितवनें, मैं जो उन्हें मिलाऊं भी॥

सर को जो मैं उठाऊं भी, तो न उठे झुका रहे।
दिल को जो मैं बढ़ाऊं भी, तो न बढ़े रुका रहे॥

कुछ जो "वह" दें तो यूं न लूं, लूं तो नहीं नहीं के बाद।
लाख रुकावटों के बाद, लाख चुनाँ चुनीं के बाद॥

बोल उठूं तो हो जुदा, उनसे रविश ज़ुबान की।
"वह" जो कहें ज़मीन की, मैं कहूं आसमान की॥

"वह" मेरे ख़त की चुटकियाँ, याद दिलायेंगे मुझे।
छेड़ने को हंसेंगे ख़ुद, और हंसायेंगे मुझे॥

मझसे बद गुमाँ बनूं, अपनी ही रखूं टेक मैं।
लाख नहीं नहीं करें, उनकी न मानूं एक मैं॥

दिल जो न माने तो उन्हें, तिरछी नजर से देख लूं।
है किवाड़ में दरार, जाके उधर से देख लूं॥

मुझसे "वह" माँगें या नहीं, दूंगी जरूर पान मैं।
फेर के मुंह बढ़ाऊंगी, हाथ से ख़ासदान मैं॥

मेरी दग़ा के जालमें, क्या वह उलझ ही जायंगे।
साफ़ हैं दिलकी औरतें, यह "वह" समझ ही जायंगे॥

आई लबों पे वह हंसी, यह कहें और हंसायें तो।
लाख दबाऊं मैं मगर, लब मेरे खुल ही जायें तो॥

दिल में जो गुदगुदी सी हो, रुक न सके कभी हंसी।
बातें ही यह हंसी की हैं, आने लगी अभी हंसी॥

उंह मुझे उसका सोच क्या, दिल में तो रंज है नहीं।
अपनी वफ़ा को छोड़ दे, दिल मेरा ऐसी शै नहीं॥

दिलमें बसे हुए हैं "वह", इसमें ख़याल उन्हींका है।
दिल मेरा वह है आइना, जिसमें जमाल उन्हींका है॥

फैले हैं रूह बनके वह, मेरे तमाम जिस्म में।
मेरी हयात हैं वही, जाँ है तमाम जिस्म में॥

ओ मेरे दिल कशिश कुछ और, ताकि वह खिंचके आही जायं
मैं उन्हें जल्द पाही जाऊं, वह मुझे जल्द पाही जायं॥

जंग को हो रही है देर, और वह मज्जे की बात है।
दिलको लुभाए नाज्ज से, हुस्न की यह भी घात है॥

अब तो यह फिक्र है कि आज, कुछ तो सिंगार चाहिये।
टूट गया है कुल बुलाक़, सोने का तार चाहिये॥

शौक़ के पास भेज दूं, एक ज़रा सा तार क्या।
दाम न लें तो, वह न लें, तार का ऐसा बार क्या॥

हाथों में चूड़ियाँ हैं कम, टूट के गिर गई कई।
आयेंगे अब बड़े मियाँ, उनसे मंगाऊंगी नई॥

मुझको भी सादगी पसंद, उनको भी सादगी पसंद ।
पहनूं सपेद ही लिबास, होगा उन्हें यही पसंद ॥

बेलें हों या हों बूटियाँ, चुभती हैं कामदानियाँ ।
चंद दुपट्टे फाड़ लूं, रखी हैं जामदानियाँ ॥

बेल कटाओ की अभी, चौक से मैं मंगा न लूं ।
लाई है अच्छन एक बेल, उसको भी लूं मैं या न लूं ॥

बेल चिकन की है मगर, कुछ भी नहीं धुली खराब ।
एक तो शर्बती बुरी, दूसरे तेपची खराब ॥

किससे मंगाऊं बेल मैं, सबसे ख़फ़ा हैं देवर आज ।
लड़के गये दुल्हनसे वह, बिगड़े हुए हैं तेवर आज ॥

क्यों न कहूं बुआसे मैं, खुद वह बनाती है कटाओ ।
चौकसे लेती आये वह, जाये जो लेने नाम पाओ ॥

हार मैं गूंध लूं अगर, फूल हों खाना बाग़ में ।
अबके बरस तो मोगरा, घरमें खिला न बाग़ में ।

होही रहेगा यह तो सब, मुझको खयाल एक है।
सास चुप जुबान चुप, नंद जरूर नेक है॥

उसकी सी बिस की गाँठ और, कोई न होगी शहर में।
रखी है मुंह में एक छुरी, उसने बुझाके जहर में॥

जब वह जलन से लाल हो, गाल हों गर्म दो तवे।
खुद तो है लहसुन और दाँत, जैसे छिले हुए जवे॥

देख के यह चमक दमक, वह मेरे रूप से जले।
रेत में कोई जिस तरह, जेठ की धूप से जले॥

आज मुझे भी है घमंड, तंज का कुछ भी ग़म नहीं।
उसको जो है किसी पे नाज, मैं भी कुछ इससे कम नहीं॥

लेती है दिलमें चुट्कियाँ, करती है दिलका खून वह।
लाती है घर से अपने साथ, मेरे लिये जुनून वह॥

ऐलो "हुजूर" आगये, बंदी संवरती ही रही
बन न पड़ा सिंगार कुछ, हौसला करती ही रही।

★

LIBRARY

LAL BAHADUR SHASTRI

National Academy of Administration

MUSSOORIE

Accession No. 124452

1. **Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.**
2. **An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.**
3. **Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.**
4. **Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.**
5. **Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.**

Help to keep this book fresh, clean & moving